पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2018-20 प्रकाशित: 16.10.2018 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री अनिल आर्य के

जन्मोत्सव पर संगीत संध्या

बुधवार, 14 नवम्बर 2018

सायं 5 से 7.30 बजे तक

आर्य समाज,अमर कालोनी,नई दिल्ली

आप सादर आमन्त्रित हैं

वर्ष-35 अंक-10 कार्तिक-2075 दयानन्दाब्द 194 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2018 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.10.2018, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

त्रिदिवसीय सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव, उदयपुर (राजस्थान) में सोल्लास सम्पन्न

पाखण्ड और अन्धविश्वास समाज की जड़ों को खोखला कर रहे है –स्वामी आर्यवेश

जनसंख्या नियन्त्रण कानून देश के विकास के लिए आवश्यक –अनिल आर्य

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव में सम्बोधित करते श्री अनिल आर्य,स्वामी आर्यवेश जी,राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद आर्य,सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी व श्री सुरेश अग्रवाल।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के तत्वावधान में गुलाब बाग,नवलखा महल, उदयपुर में दिनांक 6,7 व 8 अक्तुबर 2018 को 21 वां त्रिदिवसीय सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से हजारों श्रद्धालु आर्य जन सम्मिलित हुए। यज्ञ के ब्रह्मा डा.सोमदेव शास्त्री(मुम्बई) ने यज्ञ करवाया। मुख्य अतिथि सिक्किम के राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद आर्य पहले दिन यज्ञमान बने,उन्होंने वर्तमान परिपेक्ष्य में आर्य समाज की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि सत्यार्थ प्रकाश एक आदर्श आचार संहिता है। समारोह अध्यक्ष श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल ने आर्य जनता को आह्वान किया कि वह ग्रामीण क्षेत्रों में व आम जनता तक महर्षि दयानन्द का सन्देश पहुंचाने का कार्य करें। श्री इन्द्रदेव पियुष के मधुर भजन हुए। श्री भूपेन्द्र शर्मा ने कुशल संचालन किया।

वेद सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी आर्येशानन्द जी ने की। आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश महर्षि की विश्व को अनुठी देन है लेकिन इसके प्रचार प्रसार करने के लिये हमें स्थायी प्रचारक तैयार करने होंगे व उन्हें सवेतन,सम्मान पूर्वक हर जिले में स्थापित भी करना होगा। संसद सदस्य स्वामी सुमेधानन्द जी ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार प्रसार करके ही हम ऋषि ऋण से उऋण हो सकते हैं। वैदिक विद्वान डा.ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप पर प्रकाश डाला।

विद्यालयों के छात्र छात्राओं के समारोह की अध्यक्षता मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रेट श्री चक्रकीर्ति सामवेदी (जयपुर) ने की व केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य मुख्य अतिथि रहे,उन्होंने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता देश में जनसख्या नियन्त्रण कानून लागू करने की है,इससे वर्ग विशेष की बढ़ती विस्फोटक जनसख्या देश में एक नये पाकिस्तान की और कदम बड़ा रही है जिसके आने वाले समय में गम्भीर परिणाम होगे। श्री अनिल आर्य ने युवाओं को आर्य समाज के साथ जोड़ने पर बल दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि पाखण्ड और अन्धविश्वास फैलाने का कार्य यह टी.वी.चैनल और तथाकथित धर्म गुरू कर रहे हैं, हमें इनके पोल खाते खोलने के लिये आम जनता के बीच जा कर कार्य करने की आवश्यकता है।

आचार्य वेद प्रिय शास्त्री, शिक्षाविद् डा. परमेन्द्र कुमार दशोरा,बहिन पुष्पा शास्त्री (रिवाड़ी), आचार्य देव शर्मा (दिल्ली), भजनोपदेशक केशवदेव शर्मा, डा. उमाशंकर शर्मा (कोटा), प्रि.एम.एल.गोयल (जयपुर), श्री लोकेश द्विवेदी (उपमहापौर उदयपुर), श्री मोतीलाल आर्य, श्री सुरेशचन्द मितल, श्री संजय शाडिल्य, श्री ओमप्रकाश वर्मा, डा.अमृतलाल तापड़िया आदि ने अपने विचार रखे व कार्यक्रम को सफल बनाया। जयपुर से पधारी आर्य विदुषी बहिन सरोज वर्मा का अभिनन्दन किया गया। न्यास के कार्यकारी प्रधान श्री अशोक आर्य ने दूर दराज से पधारे सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया। ऋषि लगंर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। बिहार से पधारे सजंय सत्यार्थी ने कुशल संचालन किया। दिल्ली से परिषद् के महामन्त्री महेन्द्र भाई,राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रामकुमारसिंह आर्य,हापुड़ से आनन्दप्रकाश आर्य,आगरा से अजुर्नदेव महाजन भी समारोह में सपरिवार सम्मिलित हुए। प्रवीन आर्या व कविता आर्या (दिल्ली) के मधुर भजन सभी ने पसन्द किए। कार्यक्रम अत्यन्त सुन्दर व प्रभावशाली रहा।

श्रीमद्‌दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य का अभिनन्दन करते श्री अनिल आर्य,श्री महेन्द्र भाई,प्रवीन आर्या,रामकुमारसिंह आर्य,सन्तोष पाराशर। द्वितीय चित्र–समारोह के मुख्य अतिथि श्री अनिल आर्य का स्वागत करते अध्यक्ष श्री चक्रकीर्ति सामवेदी,डा.अमृतलाल तापड़िया व संयोजक संजय सत्यार्थी (पटना, बिहार)

"श्राद्ध और तर्पण – ज्ञानपूर्वक किया गया कर्म ही फल दायक होता है अन्य नहीं"

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आजकल देश में श्राद्ध एवं तर्पण का पक्ष चल रहा है। श्राद्ध के बारे में मान्यता है कि भाद्रपद महीने के कृष्ण पक्ष में मृतक माता–पिता, दादी–दादा व परदादी–परदादा का का श्राद्ध करने से वह तृप्त होते हैं। इसके लिये पण्डितों व ब्राह्मणों को भोजन कराने सहित यज्ञ–हवन व दान–पुण्य का महत्व माना जाता है। देश के अधिकांश व सभी हिन्दू इस श्राद्ध कर्म को करते हैं और मानते हैं कि इससे उनके मृतक माता–पिता आदि तृप्त अर्थात् एक वर्ष तक भूख से निवृत्त हो जाते हैं। क्या यह बात वैदिक सिद्धान्तों से सत्य व पुष्ट है, इस पर कोई विचार नहीं करता। श्राद्ध व अन्धविश्वासों से जिनको लाभ हो रहा है वह तो क्यों विचार करेंगे परन्तु जिन्हें इस काम पर धन व समय का व्यय करना होता है, वह भी इस पर विचार नहीं करते। यह भी कह सकते हैं कि उनके पास इसके लिये न तो समय है और न ही विवेक बुद्धि। हमारे पण्डित बन्धु भी श्राद्ध को तर्क की कसौटी पर सिद्ध नहीं करते। मृतक श्राद्ध को तर्क बुद्धि से सिद्ध किया भी नहीं जा सकता। अतः हमारा देश इस कर्म को करके किसी लाभ को तो प्राप्त नहीं हो रहा है अपितु अपनी व समाज की हानि ही कर रहा है। कैसे हानि कर रहा है, इस पर विचार करते हैं।

सनातनी पौराणिक जगत् में 18 पुराणों को ईश्वरीय ज्ञान वेदों से भी अधिक महत्व प्राप्त है। महाभारत काल व उसके बाद बुद्धकाल तक के वर्षों में इनका अस्तित्व नहीं था। संसार में सबसे अधिक पुराने ग्रन्थ वेद हैं उसके बाद चार ब्राह्मण ग्रन्थ एवं मनुस्मृति सहित उपनिषदों एवं दर्शन ग्रन्थों की रचना हुई। महाभारत काल तक पूरे विश्व में वैदिक धर्म पताका फहराती थी। न पौराणिक मत थे, न बौद्ध व जैन मत तथा न ईसाई व इस्तालम मत अस्तित्व में आये थे। पुराणों की रचना महाभारत के बहुत बाद बुद्धकाल के बाद होना आरम्भ हुई और कुछ पुराणों के श्लोकों से तो ऐसा विदित होता है कि अंग्रेजों के भारत में आने तक पुराणों की रचना होती रही। अतः पुराणों की बातें इनके रचनाकाल के आधार पर सनातन नहीं हो सकती। वेद ही पुरातन, अनादि, नित्य व सनातन ज्ञान के पुस्तक हैं जिनका आविर्भाव ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में किया था। सृष्टि के आरम्भ से हमारे सभी ऋषि मुनि वेद को ही सब सत्य विद्याओं की पुस्तक मानते चले आये हैं। वैदिक परम्परायें एवं वेद ज्ञान ही सनातन है। अन्य कोई ग्रन्थ सनातन नहीं है। वेद का पढ़ना, उसका पालन तथा प्रचार करना ही मनुष्य का धर्म है। वेदों में जीवित माता–पिता की श्रद्धापूर्वक सेवा सुश्रुषा करने का विधान है, वहीं मृतक माता–आदि पितरों का श्राद्ध करना, पण्डितों के माध्यम से उन्हें भोजन कराने का किंचित भी विधान नहीं है। महाभारत काल के बाद देश में घोर अविद्यान्धकार छा गया था। वेदों का पठन पाठन बन्द हो गया था। वेदों के प्रचार का तो प्रश्न ही नहीं था। कुछ सीमित परिवार ही वेदों को कण्ठस्थ करते थे परन्तु वह भी वेदों के अर्थ नहीं जानते थे। वेदों को कण्ठस्थ करने से यह लाभ अवश्य हुआ कि वेद सुरक्षित रह सके। यह भी परम्परा रही है कि वेद विरुद्ध कर्मों को करना पाप व मिथ्या कर्म हैं। मृतक श्राद्ध क्यों अकरणीय है, इसके कुछ कारण निम्न हैंरू

1– जीवात्मा के परमात्मा से व्याप्य–व्यापक तथा पिता–पुत्र आदि के अनेक सम्बन्ध हैं परन्तु असंख्य व अनन्त जीवात्माओं का आपस में माता–पिता, बन्धु, सखा आदि किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं है। यह सम्बन्ध हर जन्म में बदलते रहते हैं। आज मेरा जो पिता है अगले जन्म में वह मेरा पुत्र भी हो सकता है। इसी प्रकार से अन्य सभी सम्बन्धों की स्थिति है।

2– परमात्मा जीवात्मा का सम्बन्ध माता–पिता से जोड़ता है। यह सम्बन्ध जीवात्मा के पिता व माता के शरीर व गर्भ में आने से आरम्भ होता है। जन्म होने पर अन्य सम्बन्ध भी बनते है जैसे की भाई, बहिन, दादी, दादा, मौसी, मामा, ताऊ, चाचा, बुआ, फूफा, आचार्य–शिष्य आदि। यह सम्बन्ध जन्म के साथ बनते हैं। जन्म से पूर्व जन्म लेने वाली जीवात्मा के यह सम्बन्ध नहीं होते।

3– जीवात्मा के सभी सम्बन्ध अपने परिवार व सम्बन्धियों से मृत्यु होने पर समाप्त हो जाते हैं। जीवात्मा जिन माता–पिता व दादी–दादा आदि की सन्तान था, उनकी मृत्यु होने पर मृतकों की जीवात्माओं से वह सम्बन्ध समाप्त हो जाता है। मृत्यु होने पर मृतक जीवात्मा के अपने माता–पिता, पत्नी पुत्र व पुत्रियों से सभी प्रकार के सम्बन्ध भी टूट जाते हैं। मृत्यु के बाद मृतक शरीर का दाह संस्कार करना ही सन्तानों व परिवारजनों का एकमात्र कर्तव्य होता है। अन्य कोई सम्बन्ध नहीं होते।

4– मृत्यु के बाद हमारे माता–पिता, दादा–दादी तथा परदादा–परदादी अपने कर्मों के अनुसार ईश्वर की व्यवस्था से पुनर्जन्म को प्राप्त हो जाते हैं। जन्म से पूर्व जीवात्मा माता के गर्भ में माता के भोजन से ही अपने शरीर के लिये आवश्यक भोजन ग्रहण करता है और जन्म लेने के बाद कुछ समय तक माता व गोदुग्ध का पान करता है तथा उसके बाद वह अन्न, फल, दुग्ध आदि का सेवन भोजन के रूप में करता है।

5– भोजन की आवश्यकता हमारे शरीर को होती है। अन्न, फल, दुग्ध आदि पदार्थों व भोजन की आत्मा को आवश्यकता नहीं होती। आत्मा का भोजन तो सद्ज्ञान व सद्कर्म है। मनुष्य को ज्ञान वेद और वेदानुकूल ग्रन्थों को पढ़ने से प्राप्त होता है और उस ज्ञान के अनुरूप कर्म करके आत्मा सन्तुष्ट व उन्नति को प्राप्त होता है।

6– जब मृतक को भोजन व अन्य किसी पदार्थ की आवश्यकता ही नहीं है तो फिर हम श्राद्ध के माध्यम से जो अनावश्यक कर्म करते हैं, उससे हम अपने समय व धन की हानि ही करते हैं। साथ ही ऐसा करके अपनी बुद्धि का सदुपयोग न कर उसका दुरुपयोग ही करते हैं। हम समझते हैं कि ईश्वर की व्यवस्था से मृतक श्राद्ध कर्म का कुछ दण्ड हमें कर्म फल सिद्धान्त के अनुसार मिल सकता है।

7– हम इस जन्म में जब से पैदा हुए हैं, तब से व उसके बाद कभी हमें हमारे पूर्वजन्म की सन्तानों व परिवारजनों से श्राद्ध के दिनों में भोजन प्राप्त नहीं हुआ। हमें आवश्यकता ही नहीं थी। हमने श्राद्ध के दिनों में पूर्व दिनों की तरह भरपूर व भर–पेट भोजन किया। वह हमारा स्वोपार्जित था न की पूर्वजन्म के सम्बन्धियों द्वारा भिजवाया हुआ था। यदि हमें हमारे पूर्व जन्म के परिवार के पुत्र, पौत्र व प्रपौत्र भोजन भेजते और वह हमें प्राप्त होता तो हमारा कर्तव्य था कि हम उनको धन्यवाद तो करते। इससे श्राद्ध विषयक परिपाटी व जो कर्मकाण्ड किया जाता है वह सब काल्पनिक एवं मिथ्या सिद्ध होता है।

8– हिन्दू समाज में श्राद्ध की जो परम्परा है वह केवल श्राद्ध पक्ष के 15 दिनों में से किसी एक या दो दिन ही की जाती है। कोई पूरे पन्द्रह दिन भी कर सकता है। अब यदि हमारा भोजन व अन्य पदार्थ जो हम पण्डित जी को दान करते हैं, वह हमारे पूर्वजों तक पहुंचते हैं तो भोजन तो मनुष्य दिन में कई बार अथवा दो बार तो करता ही है। हम वर्ष के 365 दिनों में से एक दो दिन या 15 दिन भोजन कराते हैं। शेष 350 दिन तो हमारे माता–पिता आदि पूर्वज भूखें रहते होंगे? इसका तर्क व बुद्धि संगत उत्तर हमारे उन पण्डितों को देना चाहिये जो मृतक मनुष्य का श्राद्ध कराने का समर्थन करते हैं।

9– श्राद्ध के दिनों में मनुष्य बहुत से काम नहीं करते। कुछ यात्रायें नहीं करते तो किसी को वाहन खरीदना हो वह वाहन नहीं खरीदता। भोजन के नियम भी हैं जिसका पालन किया जाता है। कुछ मनुष्य सिर के बाल, दाढ़ी व नाखून आदि नहीं काटते व कटवाते। इस प्रकार के सभी नियम निरर्थक सिद्ध होते हैं।

10– मान लीजिये कि कोई व्यक्ति मरने के बाद पशु, पक्षियों आदि किसी योनि में पुनर्जन्म को प्राप्त हुआ। शेर का भोजन मांस है। हाथी यद्यपि शाकाहारी है परन्तु वह खाता बहुत मात्रा में है। हिरण, गाय, भैंस आदि का भोजन घास है तथा पक्षियों का वृक्षों पर बैठकर फल आदि खाना है। अतः श्राद्ध में पण्डित जी को खीर व पूरी खिलाना शेर, गाय, भैंस आदि के किसी काम नहीं आयेगा। इसके लिये तो हमें साथ में घास, मांस आदि पदार्थों को श्राद्ध में सम्मिलित करना होगा।

हम समझते हैं कि कोई बुद्धिमान व समझदार व्यक्ति कभी अपने मृतक परिवारजनों का श्राद्ध नहीं करेगा। फिर श्राद्ध कैसे करें इसका तरीका यह है कि हम अपने जीवित माता–पिता, दादी–दादा, परदादी–परदादा में से जो–जो जीवित हों उनकी पूरी निष्ठा व सिद्दत से सेवा करें। उन्हें समय पर अच्छे से अच्छा भोजन करायें। उन्हें स्वच्छ व अच्छे वस्त्र पहनने के लियें दें, उन्हें अपने साथ रखें और उनकी भावनाओं व सद्इच्छाओं का पूरा ध्यान रखे। यदि वह प्रसन्न, सुखी व सन्तुष्ट रहते हैं और हमारे इन कार्यों की प्रसंशा करते हैं तो यह वास्तविक श्राद्ध होता है। यह श्राद्ध हमें वर्ष के 365 दिन करना होगा। इससे हमें माता–पिता आदि का आशीर्वाद अवश्य मिलेगा। इस प्रकार के श्राद्ध से हमारा यह जीवन तथा परलोक अर्थात् पुनर्जन्म का जीवन सुखी, उन्नत व कल्याण से युक्त होगा। यही शिक्षा हमें वेद, दर्शन, उपनिषद्, सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ देते हैं। हमें इन सत्य ग्रन्थों का ही पालन व व्यवहार करना चाहिये। जीवन में एक दो घण्टे स्वाध्याय अवश्य करना चाहिये। स्वाध्याय से बुद्धि का ज्ञान बढ़ाने का सबसे उत्तम ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" है। यदि हम इसका एक दो घण्टे प्रतिदिन स्वाध्याय करेंगे तो एक महीने में 30 से 60 घंटे का स्वाध्याय हो जायेगा। यदि हम एक घण्टे में 10 पृष्ठ पढ़ते हैं तो हम एक महीने में 300 से 600 पृष्ठ पढ़ डालेंगे। एक महीने में ही सत्यार्थप्रकाश के प्रथम 11 समुल्लास का अध्ययन तो हर हाल में समाप्त हो जायेगा और हम सभी प्रकार के अन्धविश्वासों व मिथ्या धार्मिक कर्मकाण्डों से बच जायेंगे।

मनुष्य जीवन का उद्देश्य ईश्वरोपासना व अग्निहोत्र यज्ञ आदि करते हुए सत्यासत्य को जानकर व विचार कर कर्म करना है। हमें सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग में भी सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। यह कार्य सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से सरलता से कर सकते हैं। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से हम श्राद्ध को सार्थक रूप में करेंगे और उसके अन्धविश्वासों से युक्त पक्ष को छोड़कर अपने जीवन को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर कर सकेंगे।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

आर्य प्रचारक लाजपतराय की गिरफ्तारी

सोमवार, 8 अक्तुबर 2018,उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर अमर स्वामी प्रकाशन गाजियाबाद के श्री लाजपतराय जी की गिरफ्तारी अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर हमला है। यद्यपि केन्द्र, राजस्थान व उ.प्र. तीनों में भाजपा सत्ता में है। हम इसकी कड़ी निन्दा करते है। आर्य जन संगठित होकर उनका हर सम्भव सहयोग करें।

॥ ओ३म् ॥

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् प्रस्तुत करता है

135 वें महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में संगीत संध्या

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

वीरवार, 8 नवम्बर 2018, सायं : 4.00 से 8.00 बजे तक

स्थान: **दिल्ली हाट पीतमपुरा**, दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन नेताजी सुभाष पैलेस)

11 कुण्डीय यज्ञ सायं 4.00 से 5.00 बजे तक ब्रह्मा: आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी

मुख्य यजमान: सर्व श्री राजीव आर्य, सुरेश आर्य, राजेश जुनेजा, तिलक चान्दना, डॉ. राजीव चावला, नरेन्द्र कालरा धर्मदेव खुराना, ओमप्रकाश गुप्ता, विनोद कालरा, अमित मान, रणसिंह राणा, संजीव महाजन, वेद खट्टर, गोपाल आर्य विवेक राणा, ओमप्रकाश नागिया, महेन्द्र मनचन्दा, डॉ. रमाकान्त गुप्ता, ओमप्रकाश भावल, सतीश आर्य, नरेन्द्र कस्तुरिया

-: गायक कलाकार :-

नरेन्द्र आर्य "सुमन" * प्रवीन आर्या * अंकित उपाध्याय

मुख्य अतिथि : माननीय **श्री सत्येन्द्र जैन** (मंत्री, दिल्ली सरकार)

अध्यक्षता : आर्य नेता व शिक्षा विद् श्री आनन्द चौहान (निदेशक ऐमेटी शिक्षण संस्थान)

विशिष्ट अतिथि : श्रीमती वन्दना कुमारी (विधायक), श्रीमती रेखा गुप्ता, ममता नागपाल (पूर्व पार्षद), पूजा मदान (पार्षद)

गरिमामय उपस्थिति: श्री प्रदीप तायल (पाईटैक्स ज्वैलर्स), दर्शन अग्निहोत्री, ठाकुर विक्रम सिंह, मायाप्रकाश त्यागी राजीव कुमार (परम डेयरी ग्रुप), सुशील सलवान, सुरेन्द्र कोहली, ब्रह्म प्रकाश मान, प्रवीन भाटिया, राजरानी अग्रवाल, यशपाल आर्य (पार्षद), प्रवीण तायल, गायत्री मीना, राकेश खुल्लर, ओमप्रकाश आहुजा, आर.एस. तोमर (एडवोकेट), ओमप्रकाश जैन, वीरेश भाटी, पुष्पलता वर्मा, मदन खुराना, धर्मपाल परमार, ओमप्रकाश मनचन्दा, सुशील गुलाटी, सुनील गुप्ता, विनोद गुप्ता, माता कृष्णा सपरा, रेखा शर्मा, आनन्दप्रकाश गुप्ता, रवि चड्डा, राजेन्द्र लाम्बा, निर्मल जावा, सुधीर खुराना, नरेन्द्र अरोड़ा, प्रि. अंजु मेहरोत्रा, बलराज नागपाल, रामजी दास थरेजा

'आर्य महिला रत्न' अवार्ड से सम्मानित होंगे

श्रीमती रमेश कुमारी भारद्वाज
श्रीमती रेखा गुप्ता
श्रीमती चंन्द्रप्रभा मरवाह
श्रीमती इन्दु मेहता
श्रीमती वेद रानी

श्रीमती तृप्ता आहूजा
श्रीमती नीलम आर्या
श्रीमती चन्द्र अरोड़ा
श्रीमती अर्चना पूष्करना
श्रीमती प्रोमिला गुप्ता

श्रीमती चन्द्रकान्ता नागपाल
श्रीमती आशा भटनागर
श्रीमती दिशा मनचन्दा
श्रीमती नम्रता रहेजा
श्रीमती सपना प्रकाश

आर्य नेता: सर्वश्री ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मजिस्ट्रेट), सुरेन्द्र गुप्ता, चत्तरसिंह नागर, संजीव सेठी, अमरसिंह सहरावत, रविदेव गुप्ता, टी.आर. मित्तल, एस.के. सचदेवा, जितेन्द्र डावर, अमरनाथ बत्रा, जवाहर भाटिया, प्रदीप गोगिया, आदर्श आहूजा, सुशील बाली, माता शीला ग्रोवर, अनिता कुमार, विजयारानी शर्मा, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, अमीरचन्द रखेजा, सोहनलाल मुखी, रामकुमार भगत, महेन्द्र टांक, वेद प्रकाश, रत्नाकर बत्रा, आर.पी. सूरी, प्रकाश आर्य, अशोक आर्य, संजीव आर्य, सुरेन्द्र शास्त्री, भोपाल सिंह आर्य, सुषमा अरोड़ा, राजीव मुखी, सुनील अग्निहोत्री, नरेश विज, प्रवीण बत्रा, मनोज मान, ओमप्रकाश पाण्डेय, सुदेश डोगरा, महेश खुल्लर, सुमन नागपाल, पी.के. सचदेवा, राजपाल पुलियानी, रघुनाथसिंह यादव, डॉ. मुकेश सुधीर

ऋषि लंगर **आप सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं**

निवेदक

अनिल आर्य – राष्ट्रीय अध्यक्ष
महेन्द्र भाई – राष्ट्रीय महामंत्री
यशोवीर आर्य – राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अंजु जावा, उर्मिला आर्या – स्वागत अध्यक्ष
वेदप्रकाश आर्य – स्वागत मंत्री
रामकुमार सिंह – राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
दुर्गेश आर्य – राष्ट्रीय मंत्री
देवेन्द्र भगत – प्रेस सचिव
डॉ. धर्मवीर आर्य, व्रतपाल भगत, सोहनलाल आर्य – स्वागत मंत्री
धर्मपाल आर्य – राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
प्रवीण आर्य – राष्ट्रीय मंत्री
राकेश भटनागर – राष्ट्रीय मंत्री
सौरभ गुप्ता, अरुण आर्य, संतोष शास्त्री, वरुण आर्य – प्रबंधक गण

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली 110007 : दूरभाष : 9810117464, 9868664800, 9958889970

Website: www.aryayuvakparishad.com
E-mail: aryayouth@gmail.com

• aryayouthgroup@yahoogroups.com
• join-http://www.facebook.com/group/aryayouth

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव, नवलखा महल, उदयपुर (राजस्थान) की झलकियां

शनिवार, 6 अक्तुबर 2018, सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव, गुलाब बाग के मंच पर सिक्किम के राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद आर्य, साथ में न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य, सुरेशचन्द अग्रवाल (अहमदाबाद), स्वामी आर्येशानन्द जी, विजय शर्मा आनन्द कुमार आर्य (टाण्डा)।

सोमवार, 8 अक्तुबर 2018, अन्धविश्वास निर्मूलन सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, सम्मेलन अध्यक्ष श्री खुशहाल चन्द आर्य (कोलकता), बहिन पुष्पा शास्त्री (रिवाड़ी), शिक्षाविद एम. एल. गोयल, प्रो. उमाशंकर शर्मा, आचार्य ज्वलन्त कुमार शास्त्री (अमेठी), केशव आर्य व योगेशदत्त आर्य (भजनोपदेशक)

रविवार, 7 अक्तुबर 2018, आर्य विद्यालयों के बच्चों के कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्), समारोह अध्यक्ष मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रट जयपुर श्री चककीर्ति सामवेदी व सामने पण्डाल में उपस्थित आर्य जन।

स्वामी धर्ममुनि जी का अभिनन्दन व तपोवन आश्रम देहरादून का शरदोत्सव सम्पन्न

मंगलवार, 2 अक्तुबर 2018, आत्म शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, हरियाणा का वार्षिक यज्ञ आचार्य अखिलेश्वर जी के ब्रह्मत्व में सोल्लास सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में स्वामी धर्ममुनि जी का अभिनन्दन करते परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, प्रवीन आर्या, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, डा.शिवकुमार शास्त्री आदि। मुख्य अतिथि श्री नफेसिंह राठी व मा. रामपाल आर्य, चौ. रघुनाथसिंह यादव, जगदीश मलिक, प्रभुदयाल चौटानी, राजेन्द्र लाम्बा, धर्मदेव खुराना, ब्रह्मजीत आर्य, राजवीर शास्त्री आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। द्वितीय चित्र–वैदिक साधन आश्रम,तपोवन,देहरादून का शरद उत्सव रविवार, 7 अक्तुबर 2018 को सम्पन्न हुआ । आर्य भजनोपदेशक पं.सत्यपाल पथिक का अभिनन्दन करते आश्रम के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री,मंत्री श्री प्रेमप्रकाश शर्मा,श्री विजय आर्य(कीरतपुर) आदि।

राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य 21 अक्तुबर को कुरूक्षेत्र में

स्वर्णकार सेवा परिषद् का राष्ट्रीय वार्षिक अधिवेशन रविवार, 21 अक्तुबर 2018 को प्रातः 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक सभागार, श्री नामदेव मन्दिर, निकट पुराना बस स्टेन्ड, कुरूक्षेत्र, हरियाणा में आयोजित किया जा रहा है। परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित होंगे व श्री भगतराम वर्मा समारोह की अध्यक्षता करेंगे।

– सौरभ आर्य, राष्ट्रीय महासचिव

इन्द्रापुरम में 11 कुण्डीय यज्ञ 11 नवम्बर को

आर्य समाज,इन्द्रापुरम,गाजियाबाद के तत्वावधान में रविवार, 11 नवम्बर 2018 को प्रातः 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक मन्दिर सत्संग भवन, गेट नं. 5, ए.टी.एस. एडवान्टेज, इन्दिरापुरम, गाजियाबाद में वैदिक सत्संग का भव्य आयोजन किया जा रहा है। आचार्य महेन्द्र भाई यज्ञ के ब्रह्मा रहेंगे व परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल आर्य मुख्य अतिथि तथा श्रीमती सुदेश आर्या के मधुर भजन होंगे व समाजसेवी श्री विनोद त्यागी समारोह की अध्यक्षता करेंगे। आप सभी सादर आमन्त्रित हैं।

शोक समाचार : विनम्र श्रद्धाजंलि

1. श्री राजेश चौटानी (आर्य समाज, इन्द्रपुरी, दिल्ली) का निधन।
2. श्रीमती सीता वर्मा (धर्मपत्नि श्री बलबीर वर्मा, सरोजनी नगर) का निधन।
3. श्री ओ.पी. गाडी (आर्य समाज, इन्द्रपुरी, दिल्ली) का निधन।
4. गंगा पुत्र प्रो.जी.डी. अग्रवाल "स्वामी सानन्द" का निधन।
5. श्री मित्रदेव आर्य, आयु 45 वर्ष (आर्य समाज, सै.-33, नोएडा) का निधन।

अपीलः केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड **-SBIN0001280** पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित।

– डा. अनिल आर्य, मो.09810117464

सम्पादकः **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970